हिन्दी विभाग

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज

के छात्र समूह की त्रैमासिक दीवार पत्रिका

प्रेमचंद विशेषांक: जनवरी-मार्च, 2023

संपादक

संजय सोलोमन

सह-संपादक: **नंदनी कुमारी**

पृष्ठ सज्जा: **पूनम कुमारी**

नीतू कुमारी

प्रेमचंद विशेषांक

प्रेमचंद का जीवन

कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। 15 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह कर दिया गया था, जो अधिक समय तक चल नहीं पाया। प्रेमचंद ने मात्र 7 वर्ष की आयु में अपनी माता और 16 वर्ष कि आयु में पिता को खो दिया था। विमाता का व्यवहार भी उनके प्रति ठीक नहीं था। प्रेमचंद की प्रारम्भिक पढ़ाई एक मदरसे से हुई। 1898 में क्वींस कॉलेज से मैट्रिक में उत्तीर्ण करने के बाद सहायक शिक्षक की नौकरी करने लगे। 1906 में प्रेमचंद ने एक बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया, जिनसे उन्हें दो पुत्र श्रीपत और अमृत तथा एक पुत्री कमला हुई। 1910 में उन्होंने इन्टर तथा 1919 में बी ए उत्तीर्ण किया। 1921 में शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए लेकिन गांधीजी के असहियोग आन्दोल से प्रभावित हो कर त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात उन्होंने लेखन को ही व्यवसाय बना लिया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। 1923 में उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की तथा हंस और जागरण का प्रकाशन किया। आर्थिक स्थिति बिगड़ी तो ऋण चुकाने के लिए 1933 में फिल्म लेखन की ओर भी गए लेकिन एक वर्ष के भीतर ही लौट आए। इन सब के बावजूद ताउम्र लिखते रहे। अंत के दिनों में उनका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता चल गया। 8 अक्टूबर, 1936 को यह कलम का मजदूर इस दुनिया से विदा हो गया।

- काजल (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

प्रेमचंद का साहित्य

प्रेमचंद की आरंभिक शिक्षा फारसी में हुई थी। उनको बचपन से ही पढ़ने में रुचि थी। कम आयु से ही वे उपन्यास पढ़ने लगे थे। 1901 से ही उन्होंने 'नवाब राय' के नाम से उर्दू में साहित्य लेखन आरंभ कर दिया था। उनका पहला नाटक अप्रकाशित रहा। 1903-05 तक उनका पहला उपन्यास 'असरारे-मआबिद' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ। 1908 में उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोज़े-वतन" प्रकाश में आया। इस संग्रह को अंग्रेजों ने ज़ब्त कर नवाब राय पर राज-द्रोह का आरोप लगाया। इसके पश्चात ही वे प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' 1910 में आई। प्रेमचंद ने स्वयं अपनी उर्दू कहानियों और उपन्यासों का हिन्दी रूपांतरण किया। उनकी पहली हिन्दी कहानी 'सौत' तथा पहला उपन्यास 'सेवासदन' है। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे। कथा साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने नाटक, निबंध सहित अन्य विधाओं में भी रचनाएँ की। वे एक सफल अनुवादक भी थे। प्रेमचंद ने कथा साहित्य को उस स्तर पर पहुंचाया जो आज भी मील का पत्थर बना हुआ है। उन्होंने साहित्य को काल्पनिकता से निकाल कर यथार्थवाद की ओर उन्मुख किया। उन्होंने जनजीवन की समस्याएँ, कुप्रथाएँ, असमानता, सर्वहारा पर शोषण आदि को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। यह भी एक कारण है कि लोग उनकी कथाओं से जुड़ गएँ और वे इतने लोकप्रिय हो गए।

- अमृत कौर (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

युवमानस

नवजन मन की गाथा

प्रतिनिधि रचनाएँ

प्रेमचंद का रचना संसार बहुत बड़ा है। वे साहित्य केलिए प्रतिबद्ध थें। वे कहते थें, "मैं एक मज़दूर हूँ, जिस दिन कुछ लिख न लूँ उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक़ नहीं।"
प्रेमचंद ने आरंभ के कुछ उपन्यास उर्दू में लिखा, जो हिन्दी में देवस्थान रहस्य, क्रमशः प्रेमा, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम और वरदान नाम से प्रकाशित हुए। प्रेमचंद के अन्य प्रसिद्ध उपन्यास हैं – निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, कायाकल्प आदि। मंगलसूत्र प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है।
प्रेमचंद ने 300 के करीब कहानियाँ लिखी। प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियाँ हैं – नमक का दरोगा, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात, दो बैलों की कथा, ठाकुर का कुआं, ईदगाह, कफन, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी आदि।
प्रेमचंद के प्रमुख नाटक संग्राम, कर्बल, प्रेम की वेदी, उनका निबंध संग्रह साहित्य का उद्देश्य भी उल्लेखनीय है। उनके पत्र, संपादकीय, आलोचनाएँ, अनुवाद और टिप्पणियाँ भी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

- नीतू कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

साहित्य: समाज का प्रतिबिंब

साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। किसी भी युग के साहित्य को पढ़कर उस युग के समाज को समझा जा सकता है। यह समझ उतना ही सटीक होगा, जितना लेखक ने अपनी रचना में युगीन परिस्थितियों के साथ न्याय किया हो। प्रेमचंद एक ऐसे ही लेखक है जिन्होंने अपने युग के जनजीवन की लगभग सारे मूल समस्याओं को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। उनकी रचनाओं के केंद्र में बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, स्त्री-पराधीनता जैसे कई स्त्री संबंधित समस्याएँ हैं। मजदूरों और किसानों पर शोषण से संबंधित समस्याएं हैं। धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, छुआ-छूत, जातिगत भेदभाव जैसे कुरीतियाँ भी उनके साहित्य के केंद्र में हैं। उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव, विधवा विवाह, देशप्रेम आदि का प्रचार भी किया। प्रेमचंद की रचनाओं को पढ़ कर अंदाज़ा लगाया जा सकता है उनके युग का समाज कितनी रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था।

- पूनम कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

संपादकीय

"क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

प्रिय पाठकों,
युवमानस का यह अंक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद को समर्पित है। प्रेमचंद एक निर्भीक लेखक थें, जिसने सामंती व्यवस्था के शीश महल में घुस कर खूब तबाही मचाई। एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए जागरूक लोगों का मुखर होना बहुत अनिवार्य भी है।
साथियों, किसी भी समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। संस्कृति शब्द सम्+कृति की संधि से बना है जिसका अर्थ होता है ऐसे व्यवहार या कार्य जो समाज के सभी लोगों द्वारा समान रूप से किये जाते हैं। ये व्यवहार समाज विशेष की चेतना से प्रभावित होते हैं और समाज की चेतना का निर्धारण तत्कालीन भौतिक स्थिति से होता है। भौतिक स्थिति का सीधा जुड़ाव उत्पादन के साधनों से है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि उत्पादन के साधनों पर जिसका नियंत्रण होता है होता है समाज का दिशा निर्धारण भी वही करता है। जैसे कभी समाज की बाग-डोर जमींदारों के पास थी, फिर सामंतों और अब पूँजीपतियों के हाथों में है।
समाज बदलता है, आगे बढ़ता है किन्तु अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए समाज का सम्पन्न वर्ग अपने हित के व्यवहारों को परंपरा का रूप दे देता है। अज्ञानतावश समाज का सर्वहारा वर्ग उन परंपराओं का पालन करता जाता है जो उनके ही शोषण के माध्यम होते हैं। इन परंपराओं के विरुद्ध बोलना अपराध माना जाता है और ऐसा करने पर दंड का प्रावधान होता है।
जब-जब स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध किसी ने आवाज उठाई तब-तब समाज के ठेकेदारों ने उन्हें दबाने का प्रयास किया। सुकरात को उनके आधुनिक विचारों के लिए विष दे कर मारा गया, मंसूर को अनल हक कहने पर सूली पर चढ़ाया गया, ब्रुनो को वैज्ञानिक विचारों के लिए जिंदा जलाया गया और मीरा को विष देने का मुख्य कारण भी परंपराओं के विरुद्ध जाना ही था। इतने दमन के पश्चात भी सच कहने वाले सच कहते रहे और यही कारण है कि व्यापक स्तर पर विभिन्न सामाजिक आंदोलनों का उदय होता रहा। भारत में ही श्रमण आंदोलन से लेकर भक्ति आंदोलन और अब किसान आंदोलन तक व्यवस्था के विरुद्ध निरंकुशता की जंग का एक लंबा इतिहास मिलता है। चार्वाक, कबीर, भगत सिंह जैसे कई क्रांतिकारी हुए जिन्होंने स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध जा कर सत्य की आवाज बनने के लिए अपने समाज को प्रेरित किया।
समाज आधुनिक युग में पहुँच गया है। कबीलों से निकल कर सामंती व्यवस्था से होते हुए हम पूंजीवादी व्यवस्था के युग में प्रवेश कर चुके है। किन्तु निरंकुशता आज भी है। दमन और शोषण आज भी है। कारण यह है कि उत्पादन के साधनों का विकास तो निरंतर होता रहा है किन्तु उसके साथ के संबंध नहीं बदले। आसान भाषा में एक वर्ग अब भी शोषक है और एक वर्ग शोषित। पितृसत्ता, लैंगिक और जातिगत भेद-भाव, मजदूरों और किसानों का शोषण जैसी कई समस्याएं आज भी समाज को जकड़े हुई है और आज भी इनके विरुद्ध आवाज बुलंद करने वालों पर दमन किया जाता है, जेलों में कैद कर दिया जाता है। किन्तु इस डर से सच न कहना और चुप रह कर शोषण सहना भी शोषक का साथ देना ही है। सच का साथ देने में खतरा तो है लेकिन मैं नवजन से प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर की पात्र खाला के शब्दों में पूछता हूँ, "क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"

- संजय सोलोमन (स्नातक, सेमेस्टर-5)

आदर्शवाद से यथार्थवाद तक

प्रेमचंद के साहित्य का वैचारिक सफर आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर उन्मुख है। उन्होंने स्वयं अपनी विचारधारा को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहा है। आरंभिक रचनाओं में सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए वे अपने आदर्शों व मूल्यों को आधार बनाते थें। कालांतर में वे भौतिकवादी होते गए। गोदान और कफन तक आते-आते उनकी रचनाएँ यथार्थपरक हो गईं। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने के कारण उन पर गांधी जी के मानवतावादी विचारों का प्रभाव पड़ा। वे सांप्रदायिक एकता के प्रबल समर्थक हो गए। रूसी क्रांति के बाद उन पर समाजवादी विचारधारा का भी गहरा प्रभाव पड़ा। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन में उन्होंने सभापति के रूप में एतिहासिक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने साहित्य के वास्तविक उद्देश्य पर चर्चा करते हुए लेखकों को कलम से क्रांति करने के लिए प्रेरित किया।

- सिंकू (स्नातक, सेमेस्टर-1)

साहित्य का उद्देश्य: प्रेमचंद

प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन में सभा को संबोधित करते हुए प्रेमचंद ने साहित्य के उद्देश्य पर चर्चा की थी। उनके अनुसार "साहित्य उसी रचना को कहा जा सकता है जिसमें सच्चाई प्रकट की गई हो, भाषा प्रौढ़ एवं सुंदर हो और जिसमें दिमाग पर असर डालने का गुण हो। साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है। साहित्य केवल मन बहलाने की चीज नहीं है, अब वह जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हाल करता है। हमें सौन्दर्य की कसौटी को बदलने की आवश्यकता है। लेखक की सफलता इसी में है कि वह जिस दृष्टिकोण से किसी बात को देखे, पाठक भी उससे सहमत हो जाए। साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का भाव हो- जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"

- रोहन दुबे (स्नातक, सेमेस्टर-5)

प्रेमचंद का व्यक्तित्व

प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उनके साहित्य से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता। वे एक सुलझे हुए इंसान थे। जिसे जीते थें, महसूस करते थें, उसे ही काग़ज़ पर उतार देते थें। बचपन में ही प्रेमचंद ने बहुत सी त्रासदियाँ देख ली थीं। माँ-पिता का गुजर जाना, विमाता का दुर्व्यवहार, अल्पायु में विवाह आदि। संभवतया यही व्यक्तिक पीड़ा कालांतर में सामाजिक पीड़ा से जुड़कर उनके साहित्य में व्यक्त होने लगा। अपने आरंभिक दिनों में प्रेमचंद आर्य समाज से प्रभावित थें। पहली पत्नी के चले जाने के बाद विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने शिवरानी देवी से विवाह किया। गांधी जी के असहयोग आंदोलन के समर्थन में उन्होंने अपनी 20 वर्षों नौकरी छोड़ दी। इन सब से ज्ञात होता है कि अपने मूल्यों के प्रति वे कितने निष्ठावान थें। प्रेमचंद एक उच्च कोटि के लेखक होने के साथ ही एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने कभी अपने विचारों से समझौता नहीं किया। वे देश को स्वतंत्र देखना चाहते थें किन्तु स्वतंत्रता से उनका आशय केवल अंग्रेजी शासन से मुक्ति नहीं था, बल्कि सामंती व्यवस्था, सामाजिक और आर्थिक असमानता समेत उन सभी विषमताओं से मुक्ति था जो देश के सम्पूर्ण विकास में बाध्य बने हुए थें। प्रेमचंद ने एक व्यवसायिक लेखक की तरह रचनाएँ की। वे स्वयं को कलम का मजदूर कहते थें। उनकी आर्थिक स्तिथि भी मजदूरों से कुछ अधिक अलग नहीं थी लेकिन उनका दिल दरिया था। तंगहाली में भी उन्होंने कई लोगों मदद की। अपने विवाह में केवल 5 सेर गुड़ के शरबत से अतिथि सत्कार कर लिया लेकिन एक पराए की बेटी के विवाह के लिए उधार ले कर पैसों और गहनों का प्रबंध कराया। जब वे बीमार रहने लगे और उनकी पत्नी ने लोगों से मिलने का एक समय तय करने को कहा तो प्रेमचंद ने यह कह कर इनकार कर दिया कि जिस बड़े आदमी के नाम से मैं घबराता हूँ, वही इल्जाम मुझ पर लग जाएगा। प्रेमचंद हमेशा जमीन से जुड़े रहे, यही जुड़ाव उनकी रचनाओं में दिखता है जो पाठकों को विशेषतः गरीब और शोषित वर्ग को उनसे जोड़ता है।

- नंदनी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

अंक: जनवरी-मार्च | संपादक : संजय सोलोमन | सह-संपादक : नंदनी कुमारी | पृष्ठ सज्जा : पूनम कुमारी और नीतू कुमारी

प्रकाशक: छात्र समूह, हिन्दी विभाग, जमशेदपुर को–ऑपरेटिव कॉलेज

संपादकीय

"क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

प्रिय पाठकों,

युवमानस का यह अंक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद को समर्पित है। प्रेमचंद एक निर्भीक लेखक थें, जिसने सामंती व्यवस्था के शीश महल में घुस कर खूब तबाही मचाई। एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए जागरूक लोगों का मुखर होना बहुत अनिवार्य भी है।

साथियों, किसी भी समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। संस्कृति शब्द सम्+कृति की संधि से बना है जिसका अर्थ होता है ऐसे व्यवहार या कार्य जो समाज के सभी लोगों द्वारा समान रूप से किये जाते हैं। ये व्यवहार समाज विशेष की चेतना से प्रभावित होते हैं और समाज की चेतना का निर्धारण तत्कालीन भौतिक स्थिति से होता है। भौतिक स्थिति का सीधा जुड़ाव उत्पादन के साधनों से है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि उत्पादन के साधनों पर जिसका नियंत्रण होता है होता है समाज का दिशा निर्धारण भी वही करता है। जैसे कभी समाज की बाग-डोर जमींदारों के पास थी, फिर सामंतों और अब पूँजीपतियों के हाथों में है।

समाज बदलता है, आगे बढ़ता है किन्तु अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए समाज का सम्पन्न वर्ग अपने हित के व्यवहारों को परंपरा का रूप दे देता है। अज्ञानतावश समाज का सर्वहारा वर्ग उन परंपराओं का पालन करता जाता है जो उनके ही शोषण के माध्यम होते हैं। इन परंपराओं के विरुद्ध बोलना अपराध माना जाता है और ऐसा करने पर दंड का प्रावधान होता है।

जब-जब स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध किसी ने आवाज उठाई तब-तब समाज के ठेकेदारों ने उन्हें दबाने का प्रयास किया। सुकरात को उनके आधुनिक विचारों के लिए विष दे कर मारा गया, मंसूर को अनल हक कहने पर सूली पर चढ़ाया गया, ब्रुनो को वैज्ञानिक विचारों के लिए जिंदा जलाया गया और मीरा को विष देने का मुख्य कारण भी परंपराओं के विरुद्ध जाना ही था। इतने दमन के पश्चात भी सच कहने वाले सच कहते रहे और यही कारण है कि व्यापक स्तर पर विभिन्न सामाजिक आंदोलनों का उदय होता रहा। भारत में ही श्रमण आंदोलन से लेकर भक्ति आंदोलन और अब किसान आंदोलन तक व्यवस्था के विरुद्ध निरंकुशता की जंग का एक लंबा इतिहास मिलता है। चार्वाक, कबीर, भगत सिंह जैसे कई क्रांतिकारी हुए जिन्होंने स्थापित मान्यताओं के विरुद्ध जा कर सत्य की आवाज बनने के लिए अपने समाज को प्रेरित किया।

समाज आधुनिक युग में पहुँच गया है। कबीलों से निकल कर सामंती व्यवस्था से होते हुए हम पूंजीवादी व्यवस्था के युग में प्रवेश कर चुके है। किन्तु निरंकुशता आज भी है। दमन और शोषण आज भी है। कारण यह है कि उत्पादन के साधनों का विकास तो निरंतर होता रहा है किन्तु उसके साथ के संबंध नहीं बदले। आसान भाषा में एक वर्ग अब भी शोषक है और एक वर्ग शोषित। पितृसत्ता, लैंगिक और जातिगत भेद-भाव, मजदूरों और किसानों का शोषण जैसी कई समयस्याएं आज भी समाज को जकड़े हुई है और आज भी इनके विरुद्ध आवाज बुलंद करने वालों पर दमन किया जाता है, जेलों में कैद कर दिया जाता है। किन्तु इस डर से सच न कहना और चुप रह कर शोषण सहना भी शोषक का साथ देना ही है। सच का साथ देने में खतरा तो है लेकिन मैं नवजन से प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर की पात्र खाला के शब्दों में पूछता हूँ, "क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"

- संजय सोलोमन (स्नातक, सेमेस्टर-5)

प्रेमचंद का जीवन

कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। 15 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह कर दिया गया था, जो अधिक समय तक चल नहीं पाया। प्रेमचंद ने मात्र 7 वर्ष की आयु में अपनी माता और 16 वर्ष कि आयु में पिता को खो दिया था। विमाता का व्यवहार भी उनके प्रति ठीक नहीं था। प्रेमचंद की प्रारम्भिक पढ़ाई एक मदरसे से हुई। 1898 में क्वींस कॉलेज से मैट्रिक में उत्तीर्ण करने के बाद सहायक शिक्षक की नौकरी करने लगे। 1906 में प्रेमचंद ने एक बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया, जिनसे उन्हें दो पुत्र श्रीपत और अमृत तथा एक पुत्री कमला हुई। 1910 में उन्होंने इन्टर तथा 1919 में बी ए उत्तीर्ण किया। 1921 में शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए लेकिन गांधीजी के असाहियोग आन्दोल से प्रभावित हो कर त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात उन्होंने लेखन को ही व्यवसाय बना लिया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। 1923 में उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की तथा हंस और जागरण का प्रकाशन किया। आर्थिक स्थिति बिगड़ी तो ऋण चुकाने के लिए 1933 में फिल्म लेखन की ओर भी गए लेकिन एक वर्ष के भीतर ही लौट आए। इन सब के बावजूद ताउम्र लिखते रहे। अंत के दिनों में उनका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता चल गया। 8 अक्टूबर, 1936 को यह कलम का मजदूर इस दुनिया से विदा हो गया।

- काजल (स्नातक, सेमेस्टर-1)

प्रेमचंद का साहित्य

प्रेमचंद की आरंभिक शिक्षा फारसी में हुई थी। उनको बचपन से ही पढ़ने में रुचि थी। कम आयु से ही वे उपन्यास पढ़ने लगे थें। 1901 से ही उन्होंने 'नवाब राय' के नाम से उर्दू में साहित्य लेखन आरंभ कर दिया था। उनका पहला नाटक अप्रकाशित रहा। 1903-05 तक उनका पहला उपन्यास 'असरारे-मआबिद' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ। 1908 में उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोज़े-वतन" प्रकाश में आया। इस संग्रह को अंग्रेजों ने ज़ब्त कर नवाब राय पर राज-द्रोह का आरोप लगाया। इसके पश्चात ही वे प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' 1910 में आई। प्रेमचंद ने स्वयं अपनी उर्दू कहानियों और उपन्यासों का हिन्दी रूपांतरण किया। उनकी पहली हिन्दी कहानी 'सौत' तथा पहला उपन्यास 'सेवसादन' है। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे। कथा साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने नाटक, निबंध सहित अन्य विधाओं में भी रचनाएँ की। वे एक सफल अनुवादक भी थे। प्रेमचंद ने कथा साहित्य को उस स्तर पर पहुंचाया जो आज भी मील का पत्थर बना हुआ है। उन्होंने साहित्य को काल्पनिकता से निकाल कर यथार्थवाद की ओर उन्मुख किया। उन्होंने जनजीवन की समस्याएँ, कुप्रथाएँ, असमानता, सर्वहारा पर शोषण आदि को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। यह भी एक कारण है कि लोग उनकी कथाओं से जुड़ गएँ और वे इतने लोकप्रिय हो गए।

- अमृत कौर (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

प्रतिनिधि रचनाएँ

प्रेमचंद का रचना संसार बहुत बड़ा है। वे साहित्य केलिए प्रतिबद्ध थें। वे कहते थें, "मैं एक मज़दूर हूँ, जिस दिन कुछ लिख न लूँ उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक़ नहीं।"

प्रेमचंद ने आरंभ के कुछ उपन्यास उर्दू में लिखा, जो हिन्दी में देवस्थान रहस्य, क्रमशः प्रेमा, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम और वरदान नाम से प्रकाशित हुए। प्रेमचंद के अन्य प्रसिद्ध उपन्यास हैं – निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, कायाकल्प आदि। मंगलसूत्र प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है। प्रेमचंद ने 300 के करीब कहानियाँ लिखी। प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियाँ हैं – नमक का दरोगा, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात, दो बैलों की कथा, ठाकुर का कुआं, ईदगाह, कफन, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी आदि।

प्रेमचंद के प्रमुख नाटक संग्राम, कर्बल, प्रेम की वेदी, उनका निबंध संग्राह साहित्य का उद्देश्य भी उल्लेखनीय है। उनके पत्र, संपादकीय, आलोचनाएँ, अनुवाद और टिप्पणियाँ भी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

- नीतू कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

साहित्य: समाज का प्रतिबिंब

साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। किसी भी युग के साहित्य को पढ़कर उस युग के समाज को समझा जा सकता है। यह समझ उतना ही सटीक होगा, जितना लेखक ने अपनी रचना में युगीन परिस्थितियों के साथ न्याय किया हो। प्रेमचंद एक ऐसे ही लेखक है जिन्होंने अपने युग के जनजीवन की लगभग सारे मूल समस्याओं को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। उनकी रचनाओं के केंद्र में बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, स्त्री-पराधीनता जैसे कई स्त्री संबंधित समस्याएँ हैं। मजदूरों और किसानों पर शोषण से संबंधित समस्याएं हैं। धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, छुआ-छूत, जातिगत भेदभाव जैसे कुरीतियाँ भी उनके साहित्य के केंद्र में हैं। उन्होंने सांप्रदायिक सद्भाव, विधवा विवाह, देशप्रेम आदि का प्रचार भी किया। प्रेमचंद की रचनाओं को पढ़ कर अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उनके युग का समाज कितनी रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था।

- पूनम कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

आदर्शवाद से यथार्थवाद तक

प्रेमचंद के साहित्य का वैचारिक सफर आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर उन्मुख है। उन्होंने स्वयं अपनी विचारधारा को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहा है। आरंभिक रचनाओं में सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए वे अपने आदर्शों व मूल्यों को आधार बनाते थें। कालांतर में वे भौतिकवादी होते गए। गोदान और कफन तक आते-आते उनकी रचनाएँ यथार्थपरक हो गईं। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने के कारण उन पर गांधी जी के मानवतावादी विचारों का प्रभाव पड़ा। वे सांप्रदायिक एकता के प्रबल समर्थक हो गए। रूसी क्रांति के बाद उन पर समाजवादी विचारधारा का भी गहरा प्रभाव पड़ा। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन में उन्होंने सभापति के रूप में एतिहासिक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने साहित्य के वास्तविक उद्देश्य पर चर्चा करते हुए लेखकों को कलम से क्रांति करने के लिए प्रेरित किया।

- सिंकू (स्नातक, सेमेस्टर-1)

"हमें सौन्दर्य की कसौटी को बदलना होगा।
....साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफ़िल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है- उसका दरजा इतना न गिराइये। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है।"

~ मुंशी प्रेमचंद

साहित्य का उद्देश्य: प्रेमचंद

प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन में सभा को संबोधित करते हुए प्रेमचंद ने साहित्य के उद्देश्य पर चर्चा की थी। उनके अनुसार "साहित्य उसी रचना को कहा जा सकता है जिसमें सच्चाई प्रकट की गई हो, भाषा प्रोढ़ एवं सुंदर हो और जिसमें दिमाग़ पर असर डालने का गुण हो। साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है। साहित्य केवल मन बहलाने की चीज नहीं है, अब वह जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हाल करता है। हमें सौन्दर्य की कसौटी को बदलने की आवश्यकता है। लेखक की सफलता इसी में है कि वह जिस दृष्टिकोण से किसी बात को देखे, पाठक भी उससे सहमत हो जाए। साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का भाव हो- जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे सुलाये नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"

- रोहन दुबे (स्नातक, सेमेस्टर-5)

प्रेमचंद का व्यक्तित्व

प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उनके साहित्य से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता। वे एक सुलझे हुए इंसान थे। जिसे जीते थें, महसूस करते थें, उसे ही काग़ज़ पर उतार देते थें। बचपन में ही प्रेमचंद ने बहुत सी त्रासदियाँ देख ली थीं। माँ-पिता का गुजर जाना, विमाता का दुर्व्यवहार, अल्पायु में विवाह आदि। संभवतया यही व्यक्तिक पीड़ा कालांतर में सामाजिक पीड़ा से जुड़कर उनके साहित्य में व्यक्त होने लगा। अपने आरंभिक दिनों में प्रेमचंद आर्य समाज से प्रभावित थें। पहली पत्नी के चले जाने के बाद विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने शिवरानी देवी से विवाह किया। गांधी जी के असहयोग आंदोलन के समर्थन में उन्होंने अपनी 20 वर्षों नौकरी छोड़ दी। इन सब से ज्ञात होता है कि अपने मूल्यों के प्रति वे कितने निष्ठावान थें। प्रेमचंद एक उच्च कोटि के लेखक होने के साथ ही एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने कभी अपने विचारों से समझौता नहीं किया। वे देश को स्वतंत्र देखना चाहते थें किन्तु स्वतंत्रता से उनका आशय केवल अंग्रेजी शासन से मुक्ति नहीं था, बल्कि सामंती व्यवस्था, सामाजिक और आर्थिक असमानता समेत उन सभी विषमताओं से मुक्ति था जो देश के सम्पूर्ण विकास में बाध्य बने हुए थें। प्रेमचंद ने एक व्यवसायिक लेखक की तरह रचनाएँ की। वे स्वयं को कलम का मजदूर कहते थें। उनकी आर्थिक स्तिथि भी मजदूरों से कुछ अधिक अलग नहीं थी लेकिन उनका दिल दरिया था। तंगहाली में भी उन्होंने कई लोगों मदद की। अपने विवाह में केवल 5 सेर गुड़ के शरबत से अतिथि सत्कार कर लिया लेकिन एक पराए की बेटी के विवाह के लिए उधार ले कर पैसों और गहनों का प्रबंध कराया। जब वे बीमार रहने लगे और उनकी पत्नी ने लोगों से मिलने का एक समय तय करने को कहा तो प्रेमचंद ने यह कह कर इनकार कर दिया कि जिस बड़े आदमी के नाम से मैं घबराता हूँ, वही इल्जाम मुझ पर लग जाएगा। प्रेमचंद हमेशा जमीन से जुड़े रहे, यही जुड़ाव उनकी रचनाओं में दिखता है जो पाठकों को विशेषत: गरीब और शोषित वर्ग को उनसे जोड़ता है।

- नंदनी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

धन्यवाद